काजू के बागानों में गेंदा पुष्प की अंतर-फसल - एक लाभदायक उद्यम

डॉ. सफीना एस.ए.[1], डॉ. एस. प्रिया देवी[2], डॉ. एम. थंगम[3]

गेंदा पुष्प की खेती फार्म में शुद्ध फसल, सीमित फसल अथवा अंतर फसल के रूप में की जा सकती है। इसके अलावा इसकी उत्पादन रोपण फसलों के रूप में और बानेकी क्षेत्रों में भी संभव है। गोवा में खेती योग्य भूमि सीमित होने के कारण यहां पर इन फसलों को खाद्य फसलों, रोपण फसलों और व्यवसायिक फसलों के साथ जहां भी संभव हो खेती करने की आवश्यकता है। गोवा की प्रमुख रोपण फसलों में सुपारी और काजू प्रमुख हैं। इसलिए नारियल, सुपारी और काजू के बागानों में गेंदा जैसे पारंपरिक फूलों को अंतर फसल के रूप में उपजाने की बड़ी संभावनाएँ हैं। गेंदा पुष्प उत्पादन का क्षेत्र और उत्पादन बढ़ाने के लिए यही एक उपाय है जिससे कृषकों को आत्मनिर्भरता प्राप्त हो सकती है। इस उद्देश्य के साथ काजू के बागानों में गेंदा पुष्प की अंतर फसल के रूप में उगाने हेतु स्थानीय प्रविष्टियों संबंधी खेती कियाओं के पैकेज का मानक निर्धारित करने के लिए प्रयास किया गया।

गेंदा पुष्प की खेती बहुत आसान है। यह कम समय में तैयार हो जाती है। इस फूल की व्यापक मांग है, आकर्षक रंग और आकार होता है। इसको लंबे समय तक मुरझाये बिना रखा जा सकता है इसलिए किसानों और पुष्प विक्रेताओं में यह बहुत लोकप्रिय है। पुष्प-हार बनाने के लिए गेंदा का फूल बहुत सुविधाजनक होता है और इसका बड़ा महत्व है। गणेश चतुर्थी, दशहरा और दीपावली जैसे त्यौहारों पर इसकी गोवा में बहुत अधिक मांग होती है। गेंदा पुष्प के दो प्रजातियां होती हैं – अफ्रीकन गेंदा *(टैगेट्स इरेक्टा)* और फ्रांसिसी गेंदा *(टैगेट्स पैटुला)*। इस फसल को उगाने के लिए बीजों का प्रयोग किया जाता है। 75 से.मी. चौड़ी क्यारियों वाली पौधशाला तैयार करना चाहिए। इसे 10–20 से.मी. ऊंचाई पर पौधे उगाने के लिए सुविधाजनक लंबाई भी होनी चाहिए। गोबर की खाद को मिट्टी पर्याप्त मात्रा में भली-भांति मिलाना चाहिए। बीजों की बुआई 5 सेमी. कतारों में करें। बुआई 2–3 से.मी. से ज्यादा गहरी नहीं होनी चाहिए। बीजों को बढिया बालू के साथ मिला दें और फव्वारे से सिंचाई कर दें। पौधशाला को धान के पुआल से ढक दें। प्रारंभ में एक दिन छोड़कर सिंचाई करना चाहिए। चार-पांच दिन के भीतर पौधे उग आते हैं। बुआई के एक महीने के बाद पौधे रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं।

चार सप्ताह के गेंदा पुष्प के पौधों को काजू के बागानों में काजू वृक्षों के बीच में कुछ अंतर से लगा दें जो बाद में परिपक्व होने पर 75–90 से.मी. लंबाई तक पहुंच जाएगा। गेंदा पुष्प के पौधों को काजू वृक्षों से हटकर बीच के स्थान में दो कतारों में लगाना चाहिए और यह अंतर लगभग 60 से.मी. तक का रखा जाना है।। काजू के वृक्षों की दो कतारों के बीच इस प्रकार 4 वर्ग मीटर के अंतर पर गेंदा पुष्प के पौधों की चार कतारें लगाई जा सकती हैं। गेंदा पुष्प के पौधों के बीच 45 से.मी. का अंतराल होना चाहिए।

गेंदा पुष्प के पौधों की बेहतर वृद्धि और विकास के लिए, एन:पी:के का प्रयोग 250:100:100 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर के हिसाब से प्रयोग संस्तुत किया जाता है। नत्रजन का प्रयोग पौध रोपण के दौरान 125 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर के हिसाब से दो मात्राओं में किया जाना चाहिए और पौध रोपण के एक महीने के बाद पौधों के ऊपर नत्रजन का छिड़काव देना चाहिए। पौधों के ऊपर नत्रजन के छिड़काव के बाद मिट्टी की गुडाई की जाए। पौध रोपण के 30–45 दिन बाद या कली निकलने से पहले पौधे के ऊपर के हिस्से की थोड़ी छंटाई कर दी जाए। इससे पुष्प उपज में काफी वृद्धि देखी गई। फूल जब पूरी तरह खिल जाता है

[1] वैज्ञानिक (पुष्प विज्ञान), गोवा के लिए भा.कृ.अनु.प. का अनुसंधान परिसर, एला, ओल्ड गोवा
[2] वरिष्ठ वैज्ञानिक (फल विज्ञान), गोवा के लिए भा.कृ.अनु.प. का अनुसंधान परिसर, एला, ओल्ड गोवा
[3] वरिष्ठ वैज्ञानिक (बागवानी), गोवा के लिए भा.कृ.अनु.प. का अनुसंधान परिसर, एला, ओल्ड गोवा

Scanned by CamScanner